पुष्पांजली



पूज्य गुरुदेव ब्रह्मलीन

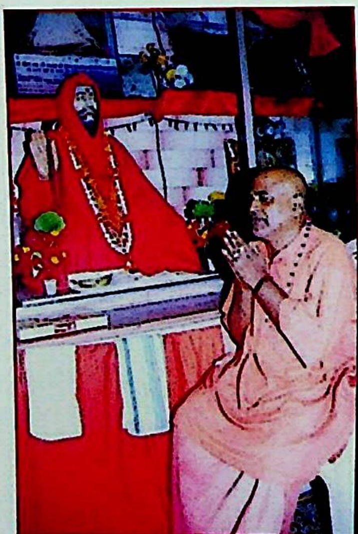
श्री 108 महन्त स्वामी निर्मलानन्द सरस्वती

20.01.1897 से 11.02.1973 ई०

राम मन्दिर सत्थू बरबरशाह (श्रीनगर कश्मीर वाले)

दुर्गा नगर तालाब, तिल्लो रोड, जम्मूतवी

को समर्पित



समर्पितकर्त्ता

स्वामी गणेशानन्द जी

स्वामी गणेशानन्द आश्रम

तीर्थनगर तालाब तिल्लो बोड़ी, जम्मू तवी-180002

अथ श्री गणपति जी की आरती

जय गौरीनंदा हरि जय गौरीनन्दा गणपति आनन्दकन्दा गुरू गणपति आनन्दकन्दा में चरणनवन्दा श्रीजयगौरीनन्दा।।1।।

सूंड सूंडालोनेत्रविशालो कुण्डलझलकन्दा हरिकुण्ड– लझलकन्दा कुंकुम केशर चन्दन कुंकुम केशव चंदन सिंदुरबदनबिन्दा जयगौरीनन्दा।।2।।

मुकुटसुघड सोहंता मस्तक सोहंता हरिमस्तकशोभन्ता। बहियां वाजूबन्दा हरि बहियां बाजूबन्दा पहुंची निरखंता जयगौरीनन्दा।।3।।

रतन जड़ित सिंहासन शोभित गणपति आनंदा मल मोतीयनकी माला, गल वैजयन्ती माला हरि गणपर्पा आनन्द। सुर नर मुनि वन्दा जय गौरीनन्दा।।4।।

मूषकवाहन राजत शिवसुतआनन्दा हरिशिवसुत आनन्दा भनत शिवानंदस्वामी हरिजपत हराहरस्वामी मेटतभवफंदा जय गौरीनन्दा।।5।।

द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकर ममलेश्वरम।।1।।

परल्यां वेजनाथं च डाकिन्यां भीम शङ्करम्।

सेतु बन्धे तु रामेशं नागेशं दारुका वने।।2।।

वराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यबम्कं गौतमी तटे।
हिमालये तु केदारं घुसृणेशं शिवालये।।3।।

एतानि ज्योतिर्लिंगङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्त जन्म कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।।4।।

लिङ्गाष्टकम्ः—

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंङ्गं निर्मलभासितशोभित लिंङ्गं
जन्मजदुःखविनाशकलिंङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंङ्गं ।।1।।

देवमुनिप्रवरार्चितलिंङ्गं कामदहं करूणाकरलिंङ्गं ।
रावणदर्पविनाशनलिंङ्गं तत्प्रणामामि सदाशिवलिंङ्गं ।। 2।।

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिंङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणालिंङ्गं ।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिंङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंङ्गं ।।3।।

कनकमहामणिभूषितलिंङ्गं फणिपतिवेष्टिताशोभितलिंङ्गं ।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिंङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंङ्गं ।।4।।

कुङकुमचन्दनलेपितलिंङ्गं पङकजहारसुशोभितलिंङ्गं ।
सञ्चि ततापविनाशनलिंङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंङ्गं ।।5।।

भूतगणार्चितसेवितलिंङ्गं भावैर्भक्तिभिरेवच लिंङ्गं ।

दिनकरकोटिप्रभाकरलिंङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंङ्गं ।।6।।

अष्टदलोपरिवेष्टितलिंङ्गं सर्वसमुद्भवकारणालिंङ्गं ।
अष्टदरिद्रविनाशितलिंङ्गं तत्प्रणामामि सदाशिवलिंङ्गं ।।7।।

सुरगुरूसुरवरपूजितलिंङ्गं सुरवनपुष्प सदार्चितलिंङ्गं ।
परात्परं परमात्मकलिंङ्गं तत्प्रणामामि सदाशिवलिंङ्गं ।।8।।

श्रीरूद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं व्रह्मवेदस्वरूपं।
निजं नर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।।1।।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं गिरा ग्यान गीतीतमीशं गिरीशं।
करालंमहाकाल कालंकृपालंगुणागार संसारपारं नतोऽहं।।2।।

तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं मनोभूत कोटिपभाक्षी शरीरं।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनीचारूगंगा लसद्भालबालेन्दु कंठ भुजंगा।।3।।

चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालंप्रियं शंकरं सर्वनाथ भजामि।।4।।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।
त्रयःशूल निर्मूलनशूलपाणिं भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।।5।।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारीसदा सज्ञनानन्ददाता पुरारी।
चिदानंदसंदोह मोहापहारीप्रसीद–प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।6।।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजंतीह लोके परे वा नराणां।
नतावत्सुखं शान्तिसन्तापनाशंप्रसीदप्रभो सर्वभूताधिवासं।।7।।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदासर्वदा शंभुतुभ्यं।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।8।।

श्लोकः रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।9।।

इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्री रूद्राष्टकं सम्पूर्णम्।

अथ सायंकाल श्रीगुरूपदाश्रय प्रार्थना

कर्प्पूरगौरं करूणावतारं संसारसारं भुजगेद्रहारम्।
सदा वसंतं ह्रदयारविन्दं भवं भवानीसहितं नमामि।।1।।

मंदारमालाकलिकालतायै, कृपालमालांकितकन्धराय।।
दिव्याम्बराय च दिगंबराय, नमः शिवाय च नमः शिवाय।।2।।

अखण्डानन्दबोधाय शोकसंतापहारिणे।
सच्चिदानंदरूपाय शंकराय नमो नमः।।3।।

अथ शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।1।।

मातङ्गचर्माम्बरभूषणाय गिरीशदेवाय धनार्चिताय।
त्रैलोक्यनाथाय त्रिपुरांतकाय तस्मै मकाराय नमःशिवाय।।2।।

शिवामुखाम्भोजविकाशनाय दक्षस्य यज्ञस्यविध्वंसनाय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय।।3।।

वशिष्ठकुम्भोद्भवगौतमाय मुनीन्द्रवेद्याय गिरीश्वराय।
श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय।।4।।

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय तस्मै यकाराय नमः शिवाय।।5।।

।। इति शिवपंचाक्षरस्त्रोत्रं समाप्तम्।।

वन्दे शिवम शंकरम

वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणें मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।।

वन्दे सूर्यशशांकवह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं।
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।1।।

हे जिह्वे भज विश्वनाथ–बद्रीकेदारभस्मेश्वराः।
भीमाशंकरवैजनाथह्यवढे नागेशरामेश्वरा।।

ऊँकारममलेश्वरं स्मरहरं महाकालं मल्लिकाऽर्जुनम्।
ध्यायेत्त्रयंबकं सोमनाथमनिशम् एकादशेऊँनमः।।2।।

देवं चन्द्रकलाधरं फणिधरं ब्रह्मा कपालधरं।
गौरीबाह्यधरं त्रिलोचनधरं रूद्राक्षमालागलं।।

गङ्गारङ्गतरङ्गपिङ्गलजटाजूट च गङ्गाधरं।
नीलाग्रे भज विश्वनाथसिद्धसहितं सोमेशरक्षाकरम्।।3।।

गङ्गा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा
कावेरी सरयूमहेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका।

क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता च या गण्डिका
पूर्णाः पूर्णजलैः समुद्रसहिताः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।4।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं भुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्।।5।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिंधुपात्रे
सुरतरूवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।

लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।6।।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजंवा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व
अयजय करूणमाब्धे श्री महादेव शम्भो।।7।।

गुरूब्रह्मा गुरूविष्णु गुरूदेवा महेश्वरः।
गुरूः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः।।8।।

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम।
मंत्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।।9।।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।।10।।

आकाशात्पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम्।
सर्वदेवनमस्कारः केशवं प्रति गच्छति।।11।।

केशवः क्लेशनाशाय दुःखनाशाय माधवः।
श्रीहरिः पापनाशाय गोविन्दः मोक्षदायकः।।12।।

मंत्रः सत्यं पूजा सत्यं देवनिरंजनम्।
गुरोर्वाक्यं सदा सत्यं सत्यमेकं परं पदम्।।13।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारूण्यभावेन रक्ष रक्ष महेश्वर।।14।।

प्रातःकाले शिवं दृष्ट्वा निशापापं विनश्यति।
आजन्मकृतमध्यान्हे सायान्हे सप्तजन्मनि।।15।।

मेरूकांचनदानानां गवां कोटिशतैरपि।
पंचकोटितुरङ्गानां तत्फलं शिवदर्शनात्।।16।।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव।।17।।

आकाशे ताडिकालिंगं पाताले बटुकेश्वरम्।
मृत्युलोके महाकालं सर्वलिङ्गं नमोऽस्तु ते।।18।।

अथ ऊँकारेश्वर जी की आरती

हरि ऊँ जयशिव ऊँकारास्वामी हरभजनिस्तारा भोला
पारवती का प्यारा।

ब्रह्माविष्णुसदाशिव भोले भोलेनाथ महादेव अर्द्धांगी गौरा
हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।1।।

एकानन चतुरानन पंचाननराजे शिवपंचाननराजे।
हंसासन गुरुडासन गुरूहंसासन गरूडासन वृषवादन साजे
हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।2।।

शिवजी के दो भुज चार चतुरभुज अष्टभुज तुम सोहै शिव दशभुज तुम सोहै।
तीनोंरूप निरखतां गुरू शंकररूप निरखतांत्रिभुवन जग मोहै
हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।3।।

अक्षमाला वनमाला, रूंडमाला धारी शिव मुंडमालाधारी
चन्दन मृगमदलेपन 2 भाले शशिधारी
हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।4।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर संगे शिवकाषाम्बर अंगे।
सनकादिक प्रभुतादिक सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिकसंगे।।
हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।5।।

करमध्ये करमण्डलचक्र त्रिशूलधर्ता शिवचन्द्र त्रिशूलधर्ता
दुःखहंरता सुखकर्ता गुरूदुःखहरता सुखकर्ता जगपालनकर्ता
हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।6।।

शिवजी के हाथों में कंगन कानों में कुण्डल गल मोतियामाला शिव गलमोहन माला।
जटा में गङ्गविराजत मस्तक में चन्द्रमा विराजत मृगछाला
हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।7।।

पारवती परबत में बिराजै शंकर कैलासा शिवशंकर कैलासा।
आकधतूरे के भोजन गुरूभङ्गधतूरे के भोजन भस्मी में वासा।

हरिः ऊँ हरहरहर महादेव।।8।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव तीनों एकस्वरूपा अन्तर नहीं रखना, शिव अन्तर नहीं रखना हरिहर जपते ब्रह्मा गुरूशिवशिव रटते विष्णु भवसागर तिरना।

हरिः ॐ हरहरहर महादेव।।9।।

सच्चिदानन्दस्वरूपा त्रिभुवन के राजा शिवत्रिभुवन के राजा।
चारों चारों वेद उचारत शंकर वेद उचारत अनहद के बाजा।

हरिः ॐ हरहरहर महादेव।।10।।

चौंसठ योगिनी मंगल गावत निरत करत भैरों शिव निरत करत भैरों।
बाजे बाजे ताल मृदङ्ग गुरूबाजत शंखघडियाला अरू झालर डमरू। हरिः ॐ हरहरहर महादेव।।11।।

गायत्री सावित्री श्रीलक्ष्मी पारवतीसंगे शिवपारवती संगे।
अर्द्धांगी बहुरंगी गुरूअर्धांगी सबरंगी शिवगौरीसंगे।।

हरिः ॐ हरहरहर महादेव।।12।।

काशीमें विश्वनाथजी विराजत नन्दोब्रह्मचारी शिवनन्दों– ब्रह्मचारी, नित उठ भोग लगावत सबदिन दरशन पावत महिमा अतिभारी। हरिः ॐ हरहरहर महादेव।।13।।

त्रिगुणानन्दजीकीआरतिनिशदिनपढ़गावें स्वामीसबदिनरटगावों
भनत शिवानन्दस्वामी गुरूजपत हराहरस्वामी गुरूकैलास में जावें। हरिः ॐ हरहरहर महादेव।।14।।

।। इति श्री ॐकारेश्वरजीकी आरती समाप्तम्।।

।।इति [illegible]प्रार्थना समाप्त।।

महामृत्युन्जय मंत्र

ऊँ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्धनम्।
उर्वारूकमिव बन्धनात् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

भावार्थः हम भगवान शंकर की पूजा करते हैं, जिनके तीन नेत्र हैं, जो प्रत्येक श्वास में जीवन शक्ति का संचार करते हैं, जो सम्पूर्ण जगत का पालन पोषण अपनी शक्ति से कर रहे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है कि वे हमें मृत्यु के बन्धनों से मुक्त कर दें, जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो जावें जिस प्रकार एक ककड़ी बेल में पक जाने के बाद उस बेल रूपी संसार के बन्धन से मुक्त हो जाती है उसी प्रकार हम भी इस संसार रूपी बेल में पक जाने के बाद जन्म–मृत्यु के बन्धनों से सदैव के लिए मुक्त हो जाएँ और आपके चरणों की अमृतधारा का पान करते हुए शरीर को त्याग कर आप में लीन हो जावें।

मन्त्र लाभः

1. यह मंत्र जीवन प्रदान करता है। (अकाल मृत्यु दुर्घटना इत्यादि)
2. यह मंत्र सर्प एवं बिच्छु के काटने पर भी अपना पूरा सहयोग प्रदान करता है।

मंत्रपुष्पम्

योऽपां पुष्पं वेद। पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति।
चन्द्रमा वा अपां पुष्पम्। पुष्पवान् पशुमान् भवति।
य एवं वेद। योऽपामायतनं वेद। आयतनवान् भवति।
अग्निर्वा अपामायतनम्। आयतनवान् भवति। योऽग्नेरायतनं वेद।।

शिवमहिम्नःस्तोत्रम्

गजाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारूभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम्।।

गजवदन (हाथी के समान मुखवाले), भूतगणों के द्वारा अत्यन्त सन्तत सेवित, कैथ तथा जामुन के फलों को सानंद खानेवाले, शोकहारी पार्वतीपुत्र परमपूज्य विघ्नेश भगवान् को (गणेशजी को) मैं प्रणाम करता हूँ।

श्री पुष्पदन्त उवाच

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यदृशी,
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाचाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरापवादः परिकरः ।।1।।

सकलतापहारी हे शंकर! आपकी महिमा की सीमाको न जानने वाले (हम जैसों) की स्तुति यदि आपकी महिमा के अनुरूप न हो तो ब्रह्मा आदि की भी वाणी (स्तुति) आपके विषय में अयोग्य ही है। यदि यह कहें कि अपनी बुद्धि के परिपाक के अनुसार स्तुति करते हुए सभी अनुपालम्भनीय हैं, आक्षेपयोग्य या अपवादयोग्य नहीं हैं तो मेरा भी स्तुतिविषयक (स्तुति करने का) यह आरम्भ (प्रयत्न) अपवादयोग्य नहीं है। (उचित ही है)।।1।।

अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयोर
तद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कास्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः
पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।2।।

आपकी महिमा वाणी ओर मन का मार्ग को अतिक्रमण किये हुए ही हैं अर्थात् वाणी और मन का अविषय है, यह निश्चित है। अनात्मा के निषेध द्वारा या भागत्याग द्वारा जिसको चकित वेद भी कहते हैं, ऐसे आप किस के स्तोतव्य हैं अर्थात ऐसे वाणी और मन के अविषय आप की स्तुति कौन कर सकता है? कोई नहीं! कितने ही प्रकार के गुण वाले आप हैं? अर्थात् अनन्त गुण हैं या निर्गुण हैं। किस के विषय आप हैं? अर्थात् किसी के विषय नहीं हो सकते? हाँ, किन्तु (लीलोपात्त) नवीन साकार स्वरूप से किस का मन नहीं लगेगा? अर्थात् सब का लगेगा। किसकी वाणी नहीं प्रवृत्त होगी? ।।2।।

मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवत
स्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।।3।।

हे भगवन्! माधुर्यादिशब्दालंकारयुक्त मोक्षरूपी अमृत कमे हेतु होने से अर्थालंकारपूर्ण वेदवाणी को निःश्वास से प्रकट करनेवाले आप को ब्रह्मा की भी वाणी विस्मय उत्पन्न करनेवाली होगी क्या? कदापि नहीं। मेरे जैसों की तो बात ही क्या? अतः आप को विस्मय कराने के लिये नहीं, किन्तु हे त्रिपुरारी! आप के गुणगान के पुण्य से मेरी इस वाणी को पवित्र करूं इस अभिप्राय से इस स्तुतिकार्य में मेरी बुद्धि प्रवृत्त हुई है।।3।।

तवैश्वयं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत्
त्रयीवस्तु व्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।4।।

सकलाभीष्टप्रद हे भगवान! जगत् की सृष्टि रक्षा एवं संहार करने वाला तीनों वेदों का परम तात्पर्यार्थस्वरूप एवं तीन सत्त्वादिगुणविभक्त शरीरों में ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर के रूप में विभक्त जो आपका ऐश्वर्य है, उसका खण्डन करने के लिए कुछ जडबुद्धि–मुढ इस जगत में भी जिनका कल्याणं न होना हो ऐसे लागों को अच्छा लगने वाला किन्तु अशोभन आक्षेपवचन इस संसार में कहते रहते हैं।।।4।।

किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चित्मुखरयति मोहाय जगतः।।5।।

(जिस को तुम मानते हो) वह परमेश्वर कैसी क्रिया करता है? उस का शरीर कौनसा है? कौन उपकरण (सामग्री) उसके पास है? उस का आधार क्या है और उसके पास उपादान वस्तु क्या हैं, जिन से कि वह तीनों लोकों की सृष्टि करता है? जिन का ऐश्वर्य कि तर्क का विषय नहीं है, ऐसे आप के बारे में इस प्रकार का अवकाश शून्य अतएव दुःस्थित यह कुतर्क लोगों को भ्रान्ति में डालने के लिये कुछ मंदबुद्धियों को या दुर्बुद्धियों को वाचाल बना देता है।।5।।

अजन्मानों लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगता
मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।।6।।

हे महादेव! क्या सावयव जगत् भी जन्मरहित हो सकता है? क्या जगत् की उत्पत्ति क्रिया कर्ता की अपेक्षा किये बिना हो सकती है? और यदि ईश्वर से अन्य कोई बनावे तो जगत् को उत्पन्न करने में क्या सामग्री हो सकती है? इस लिये मूढ ही आपके बारे में (भगवान् के बारे में) ये संशय करते हैं (ईश्वर है या नहीं इत्यादि संशय करते हैं)।।6।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रूचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।7।।

तीन वेद, सांख्यशास्त्र, योगशास्त्र, पाशुपतशास्त्र (शैवागम) वैष्णवशास्त्र (पांचरात्र) इत्यादि भिन्न–भिन्न सिद्धान्तप्रतिपादक शास्त्रों में यह श्रेष्ठ है, हितकारी है, वह श्रेष्ठ है, हितकारी है ऐसे ऐसे रूचि वैचित्र्य होने से सीधे और टेढे नाना पंथों का सेवन करने वाले (अपनाने वाले) लोगों के लिये वास्तव में आप एक ही प्राप्य है, जैसे सीधे टेढे नाना मार्ग में चलने वाले गंगा यमुना आदि के जल के लिये समुद्र ही एक प्राप्य है।।7।।

महोक्षः खट्वाङ्गंपरशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपरकणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति तु भवद्भ्रूप्रणिहितां
नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।।8।।

सकलाभीष्टप्रद है भगवान्! बूढा बैल, खटिया का अंग (एक शस्त्र) परशु मृगचर्म, भस्म, सर्प और खोपड़ी इतनी आप की कुटुंबभरण की सामग्री है। किन्तु देवता आपकी भ्रूकुटि के चालन से ही प्राप्त समृद्धि को धारण करते हैं। यह यथार्थ है कि अपने आप में रमण करनेवाले को विषयरूपी मृगमरीचिका भ्रान्ति में नहीं डाल सकती।।8।।

ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।।9।।

हे त्रिपुरारी! कोई (सांख्यमतानुयायी) इस समस्त जगत् को नित्य–सत् कहता है। दूसरे (बौद्धादि) तो सबको अनित्य–असत् कहते हैं। अन्य (नैयायिकादि) सारे ही इस जगत में अलग–अलग वस्तुओं में नित्यता और अनित्यता कहते हैं। मैं आश्चर्यचकित–सा इन सब वादों के द्वारा ही आपकी स्तुति करता हुआ लज्जित नहीं होता। क्योंकि वाचालता ठीक होती है।।9।।

तवैश्वर्यं यत्नाद्यदुपरि विरिञ्चिर्हरिरधः
परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धाभरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।।10।।

कैलाशवासी है शंकर! तेजःपुंज शरीरधारी आप के स्थूलस्वरूपरूपी ऐश्वर्य को मापने के लिये प्रयत्न से ब्रह्माजी ऊपर और विष्णु भगवान् नीचे गये किन्तु असमर्थ ही हुए, उससे अन्य उपाय छोड़कर चूंकि भक्ति और श्रद्धा के

अतिशय से गौरवपूर्ण स्तुति करते हुए वे रहे, अतः उन दोनों को दर्शन देने के लिये स्वयं ही आप प्रगट हो गये। सच है कि आपकी सेवा, भक्ति क्या फल नहीं देती? दर्शन पर्यन्त सभी फल देने वाली है।।10।।

अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।
शिरःपद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।।11।।

हे त्रिपुरान्तक शंकर! अपने बाहुओं की युद्ध करने की खुजली से परेशान रावण ने तीनों भुवनों को अनायास ही वैरकारणरहित बनाकर जो किया, वह तो अपने नौ शिरों को कमल की भाँति आपके चरणकमलों में चढा कर की गयी आपकी स्थिर भक्ति का ही प्रभाव है।।11।।

अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः।
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलिताङ्गुष्ठशिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।।12।।

आपकी सेवा से बल को प्राप्त हुए जंगल के सदृश बीस हाथों को बलपूर्वक आपके वासस्थान कैलास पर्वत में भी विक्रमण करते हुए अर्थात् इस कैलास पर्वत को ही उखाड़ कर लंका ले जाऊँ इस उद्देश्य से हाथों से कैलास को उखाड़ते हुए उस रावण की स्थिति जब आपने धीमे से अंगूठे के अग्रभाग को चलाया अर्थात् धीमे से पाँव के अंगूठे से कैलास पर्वत को दबाया, तब पाताल में भी दुर्लभ होने लगी अर्थात् रावण पाताल में जाकर दब गया। यह बात सत्य है कि सम्पन्न हुआ खल विवेकहीन हो जाता है।।12।।

यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती
मधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयस्त्रिभुवनम्।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरित्वच्चरणयो
र्न कस्या उन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।।13।।

सर्वाभीष्टप्रद भगवन्! सेवकों के समान या अपने सेवकों के ही अधीन जिसका त्रिभुवन हो गया ऐसे वाणासुर ने इन्द्र की अत्यन्त उन्नत होती हुई भी सम्पति–समृद्धि को जो नीचा दिखाया, वह आपके चरणों में नमस्कार करने वाले उस वाणासुर में कोई आश्चर्य की बात नहीं है। क्योंकि आपके सामने शिर नवाना किस उन्नति के लिये समर्थ नहीं है?।।13।।

अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयन विषं संहृतवतः।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाध्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।।14।।

त्रिनेत्रधारी भगवन्! असमय में ही ब्रह्माण्ड का नाश होते देखकर भयभीत हुए देवता और असुरों के प्रति उत्पन्न हुई कृपा के वशीभूत (होकर) (अमृतमंथन के समय) जहर को पीनेवाले आपके कण्ड में जो कालिमा हो गयी, वह कालिमा आपसे गले में शोभा न बढ़ाये ऐसी बात नहीं है। ओह! यह एक निश्चित तथ्य है कि जगत् का भय नष्ट करना ही जिसका व्यसन है, उसके लिये विकार भी, (भद्दा रंग भी) प्रशंसनीय हो जाता है।।14।।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।।15।।

हे परमेश्वर! जगत में जहां देवता, असुर, या मनुष्य कोई भी हो, कहीं भी कभी भी अपना कार्य सिद्ध किये बिना नहीं ही लौटते नहीं– विफल नहीं होते, ऐसे विजयशील जिसके बाण हैं, वह कामदेव आपको अन्य देवताओं के बराबर देखने लगा, और फल यह हुआ कि वह स्मरणीयमात्र रह गया। अर्थात् आपने उसे भस्म कर स्मरणावशेष कर दिया। यह बात निश्चित है कि जितेन्द्रियों का तिरस्कार हितकारी नहीं होता।।15।।

मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णाभ्राम्यद्भुजपरिघरूग्णग्रहगणम्।
मुहुर्द्यौर्दौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामेव विभुता।।16।।

पाँव की टक्कर से पृथिवी एकाएक (कहीं फट न जाय ऐसे) संशय को प्राप्त होती है, विष्णुपद–अन्तरिक्ष घूमते हुए भुजारूपी परिघा से पीड़ित नक्षत्र समूहों से युक्त होकर संदेहास्पद होने लगता है, विखरी हुई जटाओं से ताडित प्रान्तप्रदेश वाला स्वर्गलोक टिकता कठिन हो जाय ऐसी स्थिति प्राप्त होने लगती है। आप जगत् की रक्षा के लिये नृत्य करते हैं। आश्चर्य है कि प्रभुपना विलक्षण ही होता है।।16।।

वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरूचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते।
जगद्द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतामि
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिमदिव्यं तव वपुः।।17।।

आकाश में व्याप्त नक्षत्रगणों से सौगुनी हजारगुनी बढ़ी हुई फेन के उद्गम की शोभा से युक्त जलका जो प्रवाह (त्रिपथगामिनी गङ्गा का प्रवाह) आपके शिर में बिन्दु के समान छोटा देखा गया, उस (गंगा प्रवाह) ने ही अपने जल से पूरित समुद्र को वलय बनाकर पृथिवी को द्वीप के समान आकार में बनाया। इसी से आपका शरीर कैसी महिमा से युक्त ओर दिव्य है यह अनुमान कर सकते हैं।।17।।

रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधि
र्विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।।18।।

पृथिवी को रथ बनाया, ब्रह्मा को सारथि, मेरूपर्वत को धनुष, चन्द्र और सूर्य को रथ के दो चक्र और चक्रपाणि भगवान विष्णु को बाण बनाया। त्रिपुररूपी

तिनके को भस्म करने की इच्छावाले आप का इस प्रकार का आडम्बर करना यह क्या है? जब कि संकल्पमात्र से ही त्रिपुरनाश कर सकते थे। हाँ, यह निश्चित् है कि स्वाधीन वस्तुओं से लीला करने वाले प्रभुओं की मर्जी पराधीन नहीं होती।।18।।

हरिस्ते साहस्रं कमलबलिमाधाय पदयो
र्यदेकोने तस्मिन्निजमुदहरन्नेत्रकमलम्।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।।19।।

त्रिपुरनाशक भगवन्! विष्णु भगवान आपके चरणों में एक हजार कमलों का उपहार समर्पण कर (पूजा करते थे)। एक दिन उन हजार कमलों में से एक कम पड़ गया तो अपने नेत्ररूपी कमल को ही जो निकाल कर चढ़ाया, वही अतिशय भक्तिभाव चक्र के रूप में परिणत होकर अर्थात् वही भक्तिभाव चक्र बनकर तीनों लोकों की रक्षा के लिये आज भी जागृत हो रहा है।।19।।

क्रतौ सुप्ते जाग्रत् त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधमृते।
अतस्त्वां संप्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः।।20।।

यागादि कर्म समाप्त होते हैं– नष्ट होते हैं, तो भी यज्ञ करने वालों को स्वर्गादि फल प्राप्ति कराने के निमित आप स्वयं जागृत रहते हैं। भगवान की आराधना बिना आशुविनाशी कर्म भला कैसे फल दे सकते हैं? इसलिये यागादि कर्मों में आप को फल देने में जिम्मेदार समझ कर लोग श्रुति में श्रद्धा रख कर कर्म करने में प्रवृत्त होते हैं।।20।।

क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृता
मृषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः।
क्रतुभ्रंशस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुं श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः।।21।।

भक्तों को शरण देने वाले हे भगवन्! यज्ञादि क्रिया में निपुण शरीरधारियों के अधिपति अर्थात् प्रजापति दक्ष स्वयं यजमान, भृगु आदि ऋषियों की ऋत्विक् के रूप में उपस्थिति, देवतागण सदस्य, इन सब बातों के होते हुए भी यागादि क्रिया का फल देने की चिन्ता स्वयमेव करनेवाले आप से ही यागध्वंस हो गया। यह निश्चित है कि श्रद्धा के बिना किये गये यज्ञादि यजमान के ही नाश का कारण बनते हैं।।21।।

प्रजानाथं नाथ प्रसभसभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।।22।।

जगन्नियामक विश्वनाथ! लज्जा से संध्याशरीर छोड़कर हरिणी बनी, ऐसी अपनी पुत्री संध्या के साथ हरिण के शरीर से रति करने के इच्छुक होकर जो ब्रह्माजी अति क्रामुक होकर बलात्कार से गमन करने लगे उन को पिनाकपाणी आपका मृगको वेधने का साक्षात् उत्साहस्वरूप बाण स्वर्ग में पहुंचे होने पर भी शरीर में प्रविष्ट होकर अत्यन्त व्यथित एवं भयभीत किये हुए है और उनको (ब्रह्माजी को) आज भी नहीं छोड़ रहा है।।22।।

स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्टावा पुरमथन पुष्पायुधमपि।
यदि स्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।।23।।

त्रिपुरारी! यमनियमपरायण हे भगवन्! अपने ही सौन्दर्य की आशा पर धनुष उठाने वाले अर्थात् पार्वती के सौन्दर्य से ही शंकरजी को वश में करेंगे इस आशा से धनुष उठाने वाले कामदेव को क्षण भर में ही तिनके के समान सामने ही नेत्रानल से दग्ध देख कर भी यदि देवी पार्वती अर्धाङ्गिनी बनने से आप को स्त्रीवश समझती है तो वह ठीक ही है। कयोंकि हे वरद! अहो, युवतियाँ तत्त्वविवेकहीन होती हैं।।23।।

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचरा
श्चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मतृणां वरद परमं मङ्गलमसि।।24।।

कामान्तक वरद! हे भगवन्। श्मशानों में केलि (क्रीडा) प्रेतपिशाच साथी, चिताभस्म लेपना और मनुष्यों की खोपड़ियों की माला धारण करना इस प्रकार आप का सारा स्वभाव अमंगल भले हो, तथापि आप का स्मरण करने वालों के लिये आप परम मङ्गल स्वरूप हैं।।24।।

मनः प्रत्यक् चित्ते सविधमवधायात्तमरूतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमदसलिलोत्सङ्गितदृशः।
यदालोक्याह्लदं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किल भवान्।।25।।

संयमी पुरूष यमनियमादि शास्त्रीय विधि प्रकार के साथ प्राणयाम से प्राणों को रोक कर मन को प्रत्याहार द्वारा अन्तर्मुख बनाकर एवं हृदयकमलादि देशविशेष में धारणा पूर्वक ध्यान और समाधि से निश्चल बनाकर रोमाञ्चयुक्त होकर आनन्दाश्रुपूर्ण नेत्रों से जिस वाचामगोचर तत्त्व को देखकर अमृतमय सरोवर में डुबकी लगाये हुए जिस आन्तरिक आनन्द को प्राप्त होते हैं, वह तत्त्व आप ही हैं।।25।।

त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवह
स्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छिन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।।26।।

तुम सूर्य हो, तुम चन्द्रमा हो, तुम वायु हो, तुम अग्नि हो, तुम जल हो, तुम आकाश हो, तुम पृथिवी हो और तुम ही आत्मा (यजमान) हो, बस, यह भगवान का स्वरूप हुआ इस प्रकार बुद्धिपरिपाकवाले लोग आप को परिच्छिन्न कहा करें पर हम तो इस जगत में उस वस्तु को नहीं जानते जो आप नहीं हैं– जो आप से भिन्न है।।26।।

त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो सुरा त्रिनपि सुरा
नकारद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत्तीर्णविकृति।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरून्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद गृणात्योमिति पदम्।।27।।

शरणागतों को शरण देनेवाले हे भगवान्! तीन वेदों को; जाग्रत्, स्वप्न सुषुप्ति रूपी तीन वृत्तियों को और स्वर्ग, भूमि, पाताल इन तीनों लोकों को; ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन तीनों देवों को; अकार, उकार और मकाररूपी तीन वर्णो से बतलाने वाला और सर्व विकारातीत चतुर्थ आप के धाम को सूक्ष्म ध्वनियों से प्रतिपादन करने वाला अ–उ.म ये व्यस्त और ऊँ ऐसा समस्त पद आप को प्रतिपादन करता है।।27।

भवः शर्वो रूद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहाँ
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रणिहितनमस्योऽस्मि भवते।।28।।

हे भगवान्! भव, शर्व, रूद्र, पशुपति और उग्र महादेव तथा भीम और ईशान इस प्रकार के जो आठ नाम हैं, इन में हरेक के साथ श्रुति भी प्रमाणरूप में आती है– इनका प्रतिपादन करती है। उस सर्वप्रिय तेजः स्वरूप आपको मैं प्रणाम करता हूँ।।28।।

नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति सर्वाय च नमः।।29।।

निर्जनवनप्रिय भगवन्। अत्यन्त समीपवर्ती और अति दूरवर्ती आपको बार बार प्रणाम। कामान्तक हे भगवन्! अत्यन्त छोटे और अति महान् आपको बार–बार प्रणाम। त्रिनेत्रधारी परमेश्वर! अतिवृद्ध और अति युवा आपको बार बार प्रणाम। हे परमात्मन्! सर्वस्वरूप और 'तत्' कार के परोक्ष रूप से जिसको कहा जाय और 'इदं' करके अपरोक्षस्वरूप से जिस को कहा जाय उन सब के अधिष्ठान स्वरूप आपको बार–बार प्रणाम।।29।।

बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।30।।

विश्व की उत्पत्ति के निमित्त, अद्रिक्त रजोगुणधारी सृष्टिहेतु ब्रह्ममूर्ति भव भगवान को बार–बार प्रणाम। विश्व के संहार के निमित्त उद्रिक्त तमोगुणधारी रूद्रमूर्ति हर भगवान को बार–बार प्रणाम। सकलजनसुख के निमित्त सत्त्वोद्रेककाल मं विष्णुमूर्ति मृड भगवान को बार–बार प्रणाम। त्रिगुणातीत अवस्था में मायानभिभूत ज्ञानतेजःस्वरूप परंब्रह्मस्वरूप शिव को बार–बार प्रणाम।।30।।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः।
इति चकितममन्दीकृत्यं मां भक्तिराधात्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।।31।।

सर्वाभीष्टप्रद भगवन्! अल्प परिपाक वाला (अपरिपक्व), अविद्या–अस्मिता आदि क्लेशों के पराधीन या क्लेशों के वशीभूत यह (मेरा) चित्त तो कहाँ? और गुणों की सीमा को पार करने वाली आपकी शाश्वत महिमा कहाँ? इस प्रकार भीत मुझे भीतिरहित एवं निरलस बनाकर (मेरी भक्ति ने) आपके चरणों में महिम्नस्तुतिवाक्यरूपी पुष्पों की भेंट चढ़वायी।31।।

असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरूवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।32।।

हे परमेश्वर! यदि नीलाञ्जन पर्वत के बराबर स्याही हो, सागर दावात हो, कल्पवृक्ष की शाखा लेखनी (कलम) हो, पृथिवी पत्र (कागज) हो और अनादि अनन्त काल तक सरस्वती उसे लेकर लिखती रहे तो भी आपके गुणों का पार नहीं पा सकती अथवा आपके गुणातीत रूप को नहीं पा सकती।।32।।

असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौले
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगुणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रूचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार।।33।।

असुर, देवता और महामुनियों द्वारा पूजित चन्द्रशेखर, गुण महिमायुक्त अथच निर्गुण भगवान् शंकर की समस्त गुणियों में श्रेष्ठ पुष्पदन्त नाम के गन्धर्वराज बड़े–बड़े छन्दों में यह सुन्दर स्तुति बनायी।।33।।

अहरहरनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः।
स सवति शिवलोके रूद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतरधनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च।।34।।

शंकर भगवान का यह निर्दोष स्तोत्र शुद्धचित्त होकर परम भक्ति से प्रतिदिन जो मनुष्य पढ़ेगा वह शिवलोक में शिवसारूप्य को प्राप्त होगा और इस लोक में महान् धनी एवं दीर्घायु, पुत्रवाला और कीर्तिशाली होगा।।34।।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रिया।
महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।35।।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं सर्वमीश्वरवर्णनम्
अनौपम्यं मनोहारी पुण्यं गन्धर्वभाषितम्।।36

महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।37।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शशिधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः।।38।।

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्।।39।।

श्रीपुष्पदन्तमुखपङ्कजनिर्गतेन
स्तोत्रेण किल्बिषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन
सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।।40।।

इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्करपादयोः
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां में सदाशिवः।
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्
तत्सर्वं क्षम्यतां देव! प्रसीद परमेश्वर!।।41।।

हरि ऊँ पूर्णमिदः पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णमिदः पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

।। ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।।

ॐ नमः शिवाय
उत्पलदेवकृतं संग्रहस्तोत्रम्

संग्रहे.ण सुखदुःखलक्ष्णां मां प्रति स्थिमिदं शृणु प्रभो!
सौख्यमेष भवता समागमः स्वामिना विरह एव दुःखिता।।

अन्तरप्यतितरामणीयसी या त्वदप्रथनकालिकास्ति में।
तामपीश परिमृज्य सर्वतः स्वं स्वरूपममलं प्रकाशय।।

तावके वपृषि विश्वनिर्भरे चित्सुधारसमये निरत्यये।

तिष्ठतः सततमर्चतः प्रभुं जीवितं मृतमथान्यदस्तु में।।

ईश्वरोऽहमहमेव रूपवान् पण्डिताऽस्मि सुभगोऽस्मि कोऽपरः।

मत्समोऽस्ति जगतीति शोभते मानिता त्वदनुरागिणाः परम्।।

देवदेव भवदद्वयामृता ख्यातिसंहरणलब्धजन्मना।

तद्यथास्थितपदार्थसंविदा मां कुरूष्व चरर्णार्चनोचितम।।

ध्यायते तदनु दृश्यते ततः स्पृश्यते च परमेश्वरः स्वयम्।

यत्र पूजनमहोत्सवः स मे सर्वदास्तु भवतोऽनुभावतः।।

यद्यथास्थितपदार्थदर्शनं युष्मदर्चन महोत्सवश्च यः

युग्ममेतदितरेतराश्रयं भक्तिशालिषु सदा विजृम्भते।।

तत्तदिन्द्रियमुखेन सन्ततं युष्मदर्चनरसायनासवम्।

सर्वभावचषकेषु पूरिते ष्वापिबन्नपि भवेयमुन्मदः।।

अन्यवेद्यमणुमात्रमस्ति न स्वप्रकाशमखिलं विजृम्भते।

यत्र नाथ भवतः पुरेस्थितिं तत्र मे कुरू सदा तवार्चितुः।।

दासधाम्नि विनियोजितोऽप्यहं स्वेच्छयैव परमेश्वर त्वया।

दर्शनने न किमस्मि पात्रितः पादसंवहनकर्मणापि वा।।

शक्तिपातसमये विचारणं प्राप्तमीश न करोषि कर्हिचित्।

अंद्य मां प्रति किमागतं यतः स्वप्रकाशनविधौ विलम्बसे।।

तत्र तत्र विषये बहिर्विभा त्यन्तरे च परमेश्वरीयुतम्।

त्वां जगत्त्रितयनिर्भरं सदा लोकयेय निजपाणिपूजितम्।।

स्वामिसौधमभिसन्धिमात्रतो निर्विबन्धमधिरूह्य सर्वदा।

स्यां प्रसादपरमामृतासवा पानकेलिपरिलब्धनिर्वृतिः।।

यत्समस्तसुभगार्थवस्तुषु स्पर्शमात्रविधिना चमत्कृतिम्।

तां समर्पयति तेन ते वपुः पूजयन्त्यचलभक्तिशालिनः।।

स्फारयस्यखिलमात्मना स्फुरन् विश्वमामृशसि रूपमामृशन्।

यत्स्वयं निजरसेन घूर्णसे तत्समुल्लसति भावमण्डलम्।।

योऽविकल्पमिदमर्थमण्डलं पश्यतीश निखिलं भवद्वपुः।

स्वात्मपक्षपरिपूरिते जग त्यस्य नित्यसुखिनः कुतो भयम्।।

कण्ठकोणविनिविष्टमीश ते कालकूटमपि से महामृतम्।

अप्युपात्तममृतं भवद्वपु र्भेदवृत्ति यदि रोचते न मे।।

त्वत्प्रलापमयरक्तगीतिका नित्यंयुक्तवदनोपशोभितः।

स्यामथापि भवदर्चनक्रिया प्रेयसीपरिगताशयः सदा।।

ईहितं न बत पारमेश्वरं श्यक्यते गणयितुं तथा च मे।

दत्तमप्यमृतनिर्भरं वपुः स्वं न पातुमनुमन्यते तथा।।

त्वामगाधमविकल्पमद्वयं स्वं स्वरूपमखिलार्थघस्मरम्।

आविशन्नहमुमेश सर्वदा पूजयेयमभिसंस्तुवीय च।।

शिव स्तुति

दिव्यै पूवर्य विभूति मन्त ड्हये
सर्वात्मना सर्वदा।
कल्याणं कलयन्ति सर्व जगतां
तेम्यो महदमयो नमः
एकाकी निस्प्रहाः शन्ता
पाणि पात्रो दिगम्बरः
कदा शम्भो भवि ष्यामि
कर्म निर्मूलन क्षम

अहो निसर्ग गम्भीरो
घोरा संसार सागरा
अहो तत्तरणेपायः
परः कोप्य महेश्वरः

ऊँ महादेव शिवशङ्कर शम्भो उमाकान्त हर त्रिपुरारे।
मृत्युञ्जय वृषभध्वज शूलिन् गङ्गाधर मृड मदनारे।।

हर शिव शंकर गौरीशं वन्दे गङ्गाधरमीशं।
रूद्रं पशुपतिमीशानं कलये काशीपुरिनाथं।।

जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो।
जय शम्भो जय शम्भो शिव गौरीशङ्कर जय शम्भो।।

आचार्य मन्त्रपुष्पाञ्जलिः

हरिः ऊँनमोऽस्त्वनन्ताय सहस्त्रमूर्तयेसहस्त्रपादाक्षिशिरोरूबाहवे।
सहस्त्रनाम्ने पुरूषाय शाश्वते सहस्त्रकोटीयुगधारिणे नमः।।1।।

विष्णुब्रह्मेन्द्रदेवैः रजतगिरितटात्प्रार्थितो योऽवतीर्य
शाक्याद्यु –द्दामकण्ठीरवनखरकराघातसञ्जातमूर्च्छाम्।
छन्दोधेनुं यतीन्द्रः प्रकृतिमगमयत्सूक्तिपीयूषवर्षैः
सोऽयं श्रीशङ्करार्यो भवदवदहनात्पातु लोकानजस्त्रम्।।2।।

पूर्णः पीयूषभानुर्भवमरूतपनोद्दामतापाकुलानां

प्रौढाज्ञानान्धकारावृतविषमपथभ्राम्यतामंशुमाली।

कल्पः शाखी यतीनां विगतधनसुतादीषणानां सदा नः
पायाच्छ्रीपद्मपादादिममुनिसहित श्रीमदाचार्यवर्यः।।3।।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।4।।

नारायणं पद्मभवं वसिष्ठं शक्तिं च तत्पुत्रपराशरं च।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं गोविन्दयोगीन्द्रमथास्यशिष्यं।।5।।

श्रीशङ्कराचार्यमथास्यपद्मपादं च हस्तामलकं च शिष्यं।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून्संततमानतोऽस्मि।।6।।

विश्वं दर्पणदृश्यमाननगरीतुल्यं निजान्तर्गतं
पश्यन्नात्मनि मायया बहिरिवोद्भूतं निद्रया।
यः साक्षात्कुरुते प्रबोधसमये स्वात्मानमेवाद्वयं
तस्मै श्रीगुरुमूर्तये नम इदं श्रीदक्षिणमूर्तये।।7।।

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुदेवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः।।8।।

श्रुतिस्मृतिपुराणानामालयं करुणालयम्।
नमामि भगवत्पादं शङ्करं लोकशङ्करं।।9।।
शङ्करं शङ्कराचार्यं केशवं बादरायणम्।
सूत्रभाष्यकृतो वन्दे भगवन्तौ पुनः पुनः।।10।।

ईश्वरो गुरूरात्मेति मूर्तिभेदविभागिने।
व्योमवद्व्याप्तदेहाय दक्षिणामूर्तये नमः।।11।।
हरि ऊँ यज्ञेन यज्ञ.........

नानासुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।12।।

नवग्रह कवच

ऊँ श्री गणेशाय नम ऊँ श्री गुरवे नमः
ऊँ शिरो में पातु मार्त्तण्डः कपालं रोहिणी पति
मखमङ्गरकः पातु कण्ठं च शशिनन्द नः।।
बुद्धि जीव सदा पात्त ह्रदयं भ्रगुनन्दनः
जठर च शनि पातु जिह्वा में दितिनन्दन।।
पादौ केत्त सदाः पातु वाराः सर्वाङ्गमेव च।
तिथयो डष्टौ दिशः पातु नक्षत्राणि वधुः सदा।।
अंशौ राशि सदा पातु योगश्च स्थैर्यमेव च।

अथ गीतानामानि

गीता गंगा च गायत्री सीता सत्या सरस्वती।
ब्रह्मविद्या ब्रह्मवल्ली त्रिसंध्या मुक्तगेहिनी।।51।।
अर्द्धमात्रा चिदानंदा भवघ्नी भयनाशिनी।
वेदत्रयी परानंता तत्त्वार्थज्ञानमञ्जरी।।52।।

अब गीता के नाम कहते हैं– गीता 1 गंगा 2 गायत्री 3 सीता 4 सत्या 5 सरस्वती 6 ब्रह्मविद्या 7 ब्रह्मवल्ली 8 त्रिसंध्या 9 मुक्तगेहिनी 10 अर्द्धमात्रा 11 चिदानंदा 12 भवघ्नी 13 भयनाशिनी 14 वेदयत्री 15 परा 16 अंनता 17 तत्त्वार्थज्ञानमञ्जरी 18।।51।।52।।

इत्येतानि जपन्नित्यं नरो निश्चलमानसः।
ज्ञानसिद्धिं लभेच्छीघ्रं तथांते परम पदम्।।53।।

गीता के इन 18 नामों को नित्य मन स्थिर करके जपता रहे तो शीघ्र ही ज्ञानसिद्धिको प्राप्त हो के अंतमें मोक्ष को प्राप्त होता है।।53।।

पाठेऽसमर्थः संपूर्णे तदर्द्ध पाठमाचरेत्।
तदा गोदानजं पुण्यं लभते नात्र संशय।।54।।

जो संपूर्ण पाठ न कर सके तो आधी गीता का अर्थात नव अध्यायों का पाठ करे तो एक गोदान का पुण्य पावें इसमें संशय नहीं।।54।।

भवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्ता।

न जाया न विद्या न वृत्तिर्ममैव
गतिस्त्वं गतिस्त्वं त्वमेका भवानि।।1।।

भवाब्धावपारे महादुःखभीरूः, पपात प्रकामी प्रलोभी प्रमत्तः।
कुसंसारपाशप्रबद्धः सदाहं। गतिस्त्वं० ।।2।।

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं
न जानामि तन्त्रं न च स्तोत्रमन्त्रम्।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगम्। गतिस्त्वं०।।3।।

न जानामि पुण्यं न जानामि तीर्थं
न जानामि मुक्तिं लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिं व्रतं वापि मात, गतिस्त्वं०।।4।।

कुकर्मी कुसङ्गीकुबुद्धिः कुदासः, कुलाचारहीनः कदाचारलीनः।
कुदृष्टिः कुवाक्यप्रबन्धः सदाहम्। गतिस्त्वं0।।5।।

प्रजेशं रमेशं महेशं सुरेशं, निदेशं निशीथेश्वरं वा कदाचित्।
न जानामि चान्यत् सदाहं शरण्ये। गतिस्त्वं0।।6।।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे, जले चानले पर्वते शत्रुमध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा मां प्रपाहि। गतिस्त्वं0।।7।।

अनाथो दरिद्रो जरारोगयुक्तो
महाक्षीणदीनः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्तौ प्रविष्टः प्रणष्टः सदाहं। गतिस्त्वं0।।8।।

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यकृतं भवान्यष्टक सम्पूर्णम्

न कर्मणा न प्रजया

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः।
परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजदेतद्यतयो विशन्ति।

वेदान्त विज्ञान–सुनिश्चितार्थः सन्न्यास योगाद्यतयः शुद्धसत्त्वाः।
ते ब्रह्मलोके तु परान्तकाले परामृतात्परिमुच्यन्ति सर्वे।।

दहं विपापं परमेश्म–भूतं यत्पुण्डरीकं पुरमध्यसँ स्थम।
तत्रापि दहं गगनं विशोकस्तस्मिन् यदन्तस्तदुपासितव्यम।
यो वेदादौ स्वरः प्रोक्तो वेदान्ते च प्रतिष्ठितः।
तस्य प्रकृतिलीनस्य यः परः स महेश्वरः

(।।मन्त्रपुष्पं समर्पयामि।।)

।। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणमस्तु।।

आत्मषट्कम्

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्रणनेत्रे।
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायु श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं
शिवोऽहं ।।1।।

न च प्राणसंज्ञो न वै पञ्चवायुर् न वा सप्तधातुर्न वा पञ्चकोषः।
न वाक् पाणिपादौ न चोपस्थापाय, श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं
शिवोऽहं ।।2।।

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं
शिवोऽहं ।।3।।

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःख न मन्त्रो न तीर्थो न वेदा न यज्ञाः।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं
शिवोऽहं ।।4।।

न मे मृत्युशङ्का न मे जातिभेदः पिता नैव मे नैव माता च जन्म।
न बन्धुर्न मित्रं गुरूर्नैव शिष्य, श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं
शिवोऽहं ।।5।।

अहं निर्विककल्पो निराकाररूपो, विभुर्व्याप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणाम्।
न चा संगतं नैव मुक्तिर्न मेयः, श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं
शिवोऽहं ।।6।।

"एकश्लोकी"

किं ज्योतिस्तव भानुमानहनि मे रात्रौ प्रदीपादिकं
स्यादेवं रविदीपदर्शनविधौ किं ज्योतिराख्याहि मे।
चक्षुस्तस्य निमीलनादिससमये किं धीर्धियो दर्शने
किं तत्राहमतो भवान्परमकं ज्योतिस्तदास्मि प्रभो।।

हे प्रभो आनन्ददाता

हे प्रभो आनंद दाता ज्ञान हमको दीजिये
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिये।।धृ।।

लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बने
ब्रह्मचिंतक धर्मरक्षक वीर व्रतधारी बने।।1।।

निंदा किसी की हम किसी से भूल कर भी ना करें
सत्य बोलें झूठ त्यागें मेल आपस में करें।।2।।

प्रेमसे हम गुरूजनों की नित्यही सेवा करें
दिव्य जीवन हो हमारा तेरे यश गाया करें।।3।।

शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाय

आधार जगतुक कुनुय छु मन्त्र, शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाय।।1।।

त्रिपंच नयनो ही आदि दीवो, जटा मुकट छुय गंडिथ च्य दीवो।
चन्द अर्द्ध शेखर त्रलोचनाय, शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाय।।2।।

च्य नीलकंठो जटन छय गंगा, च्य मोक्षदायक गुसोञ्य नंगा।
अलख अगोचर छयपन गुफाये, शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाये।।3।।

बिहिथ छय गौरी च्य सूत्य नालय, वलिथ छय सर्पन हुंदुय दुशालै।
सहस्रसूर्य तीज च्य मंज जटाये, शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाये।।4।।

अथस च्य डाबर चु बीन वायान, कपाल—माल त्रिशूल धारान।
भक्तयन अभय छुख दिवान यछाये, शिवाय नमः ऊँ नमः
शिवाये।।5।।

रटिथ चु अंकुश खडगधारिथ, धनुर धनन मंज़ पिनाक चारिथ।
वुदनि बु डंडवथ करय हा माये, शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाये।।6।।

भवाय दीवो शर्वाय र्वाय दीवो, मसमाय दीवाय सुरान च्य ज़ीवो।
च्य ज़ीव पूज़ान छिय मावनाये, शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाये।।7।।

संसार सुदरस म्य तार तारूम, अमर बनावुम शिव मार्ग हावुम
वोलुस कुकर्मव कुवासनाये शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाये।।8।।

अनाथ बन्धो दयायि सागर, संसार की दुःख म्य यिमछि, तिमचठ।
जगतस दयाकर च ह्यथ ओमाये, शिवाय नमः ऊँ नमः शिवाये।।9।।

राजाधिराजाय

ऊँ यज्ञेन यज्ञमयजंत देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते हनाकं महिमानः सचंते यत्र पूर्वेसाध्याः संति देवाः।।

ऊँ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
स मे कामान् कामकामाय मह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।
कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।।

ऊँ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्टयं राज्यं
महाराजमाधिपत्यमयं समंतपर्या ईस्यात् सार्वभौम सार्वायुषः
आंतादापरार्धात् पृथिव्यै समुद्रपर्यताय एकराळिति।
तदप्येषश्लोकोभिगीतो मरूतः परिवेष्टारो मरूत्तस्यावसन्गृहे।
आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

गुरू स्तुतिः

ॐ ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं,
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधी साक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरूं तं नमामि।
स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृत्ति
र्ध्यायं ध्यायं पशुपतिमु माकान्तमन्त र्निषण्णम्।
पायं पायं सपदि परमानन्द पीयूषधारा
भूयोभूयो निजगुरूपदाम्भोजयुग्मं नमामि।
यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ।
तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः।
नमामि सद्गुरूं शान्तं प्रत्यक्षं शिवरूपिणम्।
शिरसा योगपीठस्थं धर्मकामार्थसिद्धये।
श्रीगुरूं परमानन्दं वन्दाम्यानन्द विग्रहम्।
यस्य सान्निध्यमात्रेण चिंदानन्दायते परम्।।
अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
अज्ञानतिमरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।
हरौरूष्टे गुरूस्त्रता गुरौ रूष्टे न कश्चन।
सर्वदेवस्वरूपाय तस्मै श्रीगुरवे नमः।
गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुर्गुरूः साक्षान्महेश्वरः।
गुरूरेव जगत्सर्व तस्मै श्रीगुरवे नमः।
ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।

ज्ञानमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा।
नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे।
विद्यावतारसंसिद्ध्यैस्वीकृतानेकविग्रह।
नवाय नवरूपाय परमार्थैकरूपिणे।
सर्वाज्ञान तमोभेद भानवे चिद्घनाय ते।
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्त विग्रहाय परात्मने।
परतन्त्राय भक्ताना भव्यानां भव्यहेतवे।
ज्ञानिनां ज्ञानरूपाय प्रकाशाय प्रकाशिनाम्।
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम्।
पुरस्तात्पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम्।

इति गुरूस्तुतिः।।

॥ श्रीः ॥

॥ देवीखड्गमालास्तोत्रम् ॥

ॐ श्री गणेशाय नमः

श्री गुरुपादुकावन्दनम्

ऐंकार-ह्रींकार-रहस्ययुक्त-श्रींकारगूढार्थ-महाविभूत्या।
ओंकारमर्म-प्रतिपादिनीभ्यांनमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम्॥



आत्म समर्पणम्

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमण-मशनाद्याहुति-विधिः।
प्रणामः संवेशः सुख-मखिल-मात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्याय-स्तव भवतु यन्मे विलसितम्॥

श्री गणेशाय नमः

खड्गमालामंत्रः

अस्य श्रीखड्गमालामन्त्रस्य, उपस्थादिष्ठायिने वरूणादित्यऋषये नमः शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमो मुखे, ललितादेवतायै0 हृदये, क 4 बीजा0 गुह्ये, ह 4 शक्तये0 पादयोः, स 3 कीलका0 नाभौ, श्रीललिताप्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः, कुटत्रयद्विरावृत्या करहृदयादिन्यासः।

ध्यानम्

पद्मरागप्रतीकाशां त्रिनेत्रां चन्द्रशेखरम्
नवरत्नलसद्भूषा भूषितापादमस्तकाम्।
पाशाङ्कुशौ पुष्पशरान् दधतीं पुण्ड्रचापकम्
पूर्णतारूण्य–लावण्य–तरङ्गितकलेवराम्।।
स्वसमानाकारवेष–कामेशाश्लेष–सुन्दराम्
इति ध्यात्वा, मानसैः सम्पूज्य।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरूण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवादूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये परमेश्वर–परमेश्वरि

मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचार्यमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानातमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि श्रीरामानन्दमय्यणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्य सिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि कामाकर्षणि बुध्याकर्षण्यहङ्काराकर्षणि शब्दाकर्षणि स्पर्शाकर्षणि रूपाकर्षणि रसाकर्षणि गन्धाकर्षणि चित्ताकर्षणि धैर्याकर्षणि स्मृत्याकर्षणि नामाकर्षणि बीजाकर्षण्यात्माकर्षणि अमृताकर्षणि शरीराकर्षणि सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेऽ–नङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्गमालिनी सर्वसंक्षोभिणचक्रसवामिनि गुप्ततरयोगिनि, सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसम्मोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसम्पतिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसम्पत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रषमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्णयोगिनि सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि वशिनि कामेश्वरि मोदिनि

विमलेऽरूणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि श्रीश्रीमहाभट्टारिके स्र्वानन्दमयचक्रस्वामिनि परापररहस्ययोगिनि त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्बमहात्रिपुरसुन्दरि महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महामहाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्रनगरसाम्राज्ञि नमस्ते त्रिः स्वाहा श्रीं ऐं ह्रीं ऊँ श्रीपरदेवतार्पणमस्तुः।

इति श्रीत्रिपुरार्णवोक्तो मालामन्त्रः समाप्त।

इस खड्गमाला मन्त्र के प्रभाव से उत्पन्न करने वाले वरूणादिंत्य ऋषि को नमस्कार है (यह कहकर) शिर का स्पर्श करें, गायत्री छन्द को नमस्कार है कहकर मुख छुए, ललिता देवी को नमस्कार कहकर हृदय में स्पर्श करें, क 4 बीज को नमस्कार है कहकर गुह्येन्द्रिय स्पर्श, ह 4 शक्ति को नमस्कार है पैरों में स्पर्श करें, से 3 कीलक को नमस्कार है नाभि छुए, ललिता देवी की प्रसन्नतां को प्राप्त करने के लिए पाठ करने में विनियोग हैं यह कहकर हाथ की गदोली में जल लेकर गिरा दें। ऊँ क अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऊँ क तर्जनीभ्यां नमः। ऊँ ह मध्यमाभ्यां नमः। ऊँ ह अनामिकाभ्यां नमः। ऊँ स कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ऊँ स करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। यह कहकर करन्यास करें। ऊँ क हृदयाय नमः। ऊँ क शिरसे स्वाहा। ऊँ ह शिखायै वषट्। ऊँ ह कवचाय हुं। ऊँ सः नेत्रत्रयाय वौषट्। ऊँ सः अस्त्राय फट्।। यह कहकर हृदयादिन्यास करें।

ललिता सहस्त्रनाम स्तोत्रम्

ध्यान करें

मूँगे के समान कान्ति वाली, तीन नेत्रों वाली, मस्तक पर चन्द्र को धारण करने वाली, नूतन रत्नों की शोभा से नख से शिख तक सुशोभित होने वाली, हाथों में पाश अङ्कुश, पुष्पों के बाण तथा ईख के धनुष को धारण करने वाली, परिपक्व युवावस्था के शोभा से लहराते हुए शरीर को धारण करने वाली, अपने समान ही आकार और वस्त्र से सुशोभित शिव के साथ आलिङ्गन करने के कारण सुन्दर लगने वाली देवी को प्रणाम है।

इस प्रकार ध्यान करके, मानसिक रूप से भलीभाँति पूजा करके।

ॐ त्रिगुणात्मिका महाकाली, महासरस्वती, महालक्ष्मी रूपा त्रिदेवियों को नमस्कार हैं। तीनों लोकों में अद्वितीय सौन्दर्य सम्पन्ना, हृदय की देवी, शिर की देवी, चोटी में बसने वाली देवी, नेत्रोंमें ज्योति रूपा रहने वाली देवी, शिव की प्राणवल्लभा, भग (ऐश्वर्य) की माला पहिनने वाली, हमेशा प्रसन्न रहने वाली, नक्षत्रों की माला पहिनने वाली, अग्नि में रहने वाली, महावज्र की स्वामिनी, पार्वती की सखी, शीघ्र कार्य करने वाली, सुन्दरियों में श्रेष्ठ, सदा रहने वाली, नीले रंग की पताका वाली, विशिष्ट जय देने वाली, सब प्रकार से मङ्गल करने वाली, ज्वाला स्वरूप धारण करने वाली, विभिन्न रूप धारण करने वाली, उत्कृष्ट नित्यता प्राप्त करने वाली, सर्वेश्वर की सहचारिणी, तेज धारण करने वाली, छठी की स्वामिनि, नक्षत्रों की अधीश्वरी, ध्यान से ईश्वर का साक्षात्कार कराने वाली, लोपा मुद्रा को प्राप्त होने वाली, अगस्त्य को प्राप्त होने वाली, प्रलय कालीन सूर्य का रूप धारण करने वाली, धर्म की ईश्वरी, मोक्षदायिनी, चन्द्रस्वरूपिणी, विष्णुरूपिणी, सूर्यरूपिणी, तेजरूपिणी, कामरूपिणी, कल्याणरूपिणी, रत्नरूपिणी, कृष्णमयी, श्रीरामानन्दमयी, अणिमा, लघिमा, महिमा, ईशित्व, वशित्व, प्राकाम्य, भुक्ति, इच्छा, प्राप्ति आदि रूपों को धारण करने वाली, समस्त कार्य सिद्ध करने वाली, ब्रह्म रूपे, शिवे, कुमारी का रूप धरने वाली, विष्णु प्रिये, वाराह की प्रिये, इन्द्राणी का स्वरूप प्रापत करने वाली, चामुण्डा कही जाने वाली, महालक्ष्मी, सबको हिला देने वाली, सबको भगा देने वाली,,सबको आकर्षित करने वाली, सबको प्रसन्न करने वालीए सबको वश में रखने वाली, सबको पगला बना देने वाली, सबको अतिशय नियन्त्रित करने वाली, सर्वत्र आकाश में विचरण करने वाली, सबकी बीज रूपा, सबको उत्पन्न करने वाली, तीनों लोकों में रहने वाली, त्रिलोक को

मोहित करने वाले चक्र की स्वामिनी, योगिनी रूप में दिखाई पड़ने वाली, काम को आकर्षित करने वाली, बुद्धि को खींचने वाली, अहभाव को आकर्षित करने वाली, शब्द–स्पर्श–रूप–रस–गन्ध–चित्त– धैर्य–स्मृति–नाम–बीज, आत्मा अमृत–शरीर आदि आकर्षित करने वाली, सम्पूर्ण दिशाओं में फैले हुए चक्र की स्वामिनी, गुप्तयोगिनी, काम की पुष्प, काम की मेखला, काम उत्पन्न करने वाली, काम के लिए विह्वल रहने वाली पगला बना देने वाली, काम के चिह्नों वाली, काम का वेग बढ़ाने वाली, काम को रोकने वाली, इच्छाओं को उत्पन्न करने वाली, सबको व्यथित करने वाले चक्र की स्वामिनी, अतिशय गोपनीय योगिनी, सबको व्यथित करने वाली, सबको भगाने वाली, सबको मोहने वाली, सबको निश्चेष्टा करने वाली, सबको जभाँई देने वाली, सबको वश में कने वाली, बसको खुश करने वपली, बसको मतवाला बनाने वाली, सब प्रयोजनों को सिद्ध करने वाली, समस्त सम्पत्तियों को पूर्ण करने वाली, समस्त मन्त्रों में रहने वाली, सारे झगड़ों का विनाश करने वाली, समस्त सौभाग्यदायक चक्र की स्वामिनी, सम्प्रदाय की योगिनी, सकल सिद्धि देने वाली, समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली, समस्त दुःखों से छुटकारा दिलाने वाली, समस्त मृत्युओं को शान्त करने वाली, सब विघ्नों को दूर करने वाली, समस्त अङ्गों में सौन्दर्य धारण करने वाली, समस्त सौभाग्यों को देने वाली, समस्त प्रयोजन सिद्ध करने वाले यन्त्र की स्वामिनी, योगिनी कुल में सर्वश्रेष्ठ, सब कुछ जानने वाली, सबकी शक्ति, समस्त ऐश्वर्य को देने वाली, समस्त ज्ञान से परिपूर्ण रहने वाली, सब रोगों को नष्ट करने वाली, सबको आश्रय देने वाली, समस्त पापों को दूर करने वाली, सम्पूर्ण आनन्द को देने वाली, सबके लिए रक्षा का रूप धारण करने वाली, सर्वाभीष्ट देने वाली, सबसे रक्षा करने वाले चक्र की स्वामिनी, निडर योगिनी, इन्द्रियों को नियन्त्रित करने वाली, शङ्करप्रिये, प्रसन्नता देने वाली, निर्मल रक्तवर्ण की, जीतने वाली, सबकी स्वामिनी, कुलीन, समस्त रोग दूर करने वाले चक्र की स्वामिनी, अगम्ययोगिनी, बाण धारण करने वाली, धनुष धारण करने वाली, पाश, अङ्कुश धारण करने वाली, महती कामनाओं को पूर्ण करने वाली, अति कठोर की स्वामिनी, अति ऐश्वर्य प्रदान करने वाली, महालक्ष्मी सम्पूर्ण सिद्धिदाता यन्त्र की ईश्वरी, अति गुप्तयोगों वाली सर्वश्रेष्ठ राजकुमारी सम्पूर्ण आनन्ददायी यन्त्र की स्वामिनी, विद्या–अविद्या के रहस्य को समझने वाली तीनों लोकों की आकृति, तीनों लोकों की स्वामिनी, तीनों लोकों की सुन्दरी, तीनों लोकों में रहने वाली व तीनों लोकों की लक्ष्मी, तीनों लोकों को धारण करने वाली, लोकत्रय में सिद्धिरूपा, तीनों लोकों की माता, तीनों लोकों में अति सुन्दरी, महाशिव की प्रिये, महनीय महारानी, लोकोत्तर शक्ति

वाली, अति गुप्त रहने वाली, श्रेष्ठतम आदेशों वाली, अतिशय प्रसन्न रहने वाली, वहुत अधिक चलने वाली (या धड़कने वाली) अति उदार स्वभाव वाली, श्रेष्ठतम श्री यन्त्र की महारानी, हे देवि! तुम्हें कायिक, वाचिक और मानसिक त्रिरूप से तीन बार प्रणाम करता हूँ। तीन रूपों को धारण करने वाली इस तरह की महादेवी को मेरी स्तुति अर्पित है।

यह श्री त्रिपुरार्णव ग्रन्थ के द्वारा वताया गया माला मन्त्र पूर्ण हुआ।

देवी स्तुति

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्ति[1] प्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।7।।
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।8।।
कलाकाष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि।
विश्वस्योपरतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।9।।
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये[2] शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।10।।
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।11।।
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।12।।
हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणि।
कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।13।।
त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनि।
माहैश्वरीस्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते।।14।।
मयूरकुक्कुटवृते महाशक्तिधरेऽनघे।
कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते।।15।।
शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे।
प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते।।16।।
गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुंधरे।
वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।।17।।
नृसिंहरूपेणोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे।
त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।।18।।

किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले।
वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।।19।।
शिवदूतीस्वरूपेण हतदैत्यमहाबले।
घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।।20।।
दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे।
चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।21।।
लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पु[1]ष्टिस्वधे ध्रुवे।
महारात्रि[2] महाऽविद्ये[3] नारायणि नमोऽस्तु ते।।22।।
मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते।।23।।
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।24।।
एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातु नः सर्वभीतिभ्यः काँत्यायनि नमोऽस्तु ते।।25।।
ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम्।
त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते।।26।।
हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽन सुतानिव।।27।।
असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम्।।28।।
रोगानशेषानपहंसि तुष्टा, रूष्टा[1] तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां, त्वामाश्रिता ह्यश्रयतां प्रयान्ति।।29।।
एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य, धर्मद्विषां देवि महासुराणाम्।
रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं, कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या।।30।।
विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे, विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम्।।31।।

अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम्

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥1 ॥
रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥2 ॥
कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः।
नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥3 ॥
दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥4 ॥
अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नंमो नमः।
नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥5 ॥
या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥6 ॥
या देवी सर्वभेतेषु चेतनेत्यभिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥7 ॥
या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥8 ॥
या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥9 ॥
या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥10 ॥
या देवी सर्वभूतेषुच्छायारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥11 ॥

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥12॥

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥13॥

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥14॥

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥15॥

या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥16॥

या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥17॥

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥18॥

या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥19॥

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥20॥

या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥21॥

या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥22॥

या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥23 ॥
या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥24 ॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥25 ॥
या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥26 ॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या।
भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः॥ 27 ॥
चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥28 ॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी, शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ॥29 ॥
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै-रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः, सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ॥30 ॥

अथ दुर्गाद्वत्रिंशन्नाममाला

एक सयम की बात है, ब्रह्मा आदि देवताओं ने पुष्प आदि विविध उपचारों से महेश्वरी दुर्गाका पूजन किया। इससे प्रसन्न होकर दुर्गतिनाशिनि दुर्गाने कहा–'देवताओ मैं तुम्हारे पूजन से संतुष्ट हूँ, तुम्हारी जो इच्छा हो, माँगो, मैं तुम्हें दुर्लभ–से दुर्लभ वस्तु भी प्रदान करूँगी।' दुर्गा का यह वचन सुनकर देवता बोले– 'देवि! हमारे शत्रु महिषासुरको, जो तीनों लोकोंके लिये कंटक था, आपने मार डाला, इससे सम्पूर्ण जगत् स्वस्थ एवं निर्भय हो गया। आपकी ही कृपा से हमें पुनः अपने–अपने पदकी प्राप्ति हुई है। आप भक्तों के लिये

कल्पवृक्ष हैं, हम आपकी शरण में आये हैं। अतः अब हमारे मनमें कुछ भी पाने की अभिलाषा शेष नहीं है। हमें सब कुछ मिल गया। तथापि आपकी आज्ञा है, इसलिये हम जगत्की रक्षा के लिये आपसे कुछ पूछना चाहते हैं। महेश्वरि! कौन–सा ऐसा उपाय है, जिससे शीघ्र प्रसन्न होकर आप संकट में पड़े हुए जीव की रक्षा करती हैं। देवेश्वरि! यह बात सर्वथा गोपनीय हो तो भी हमें अवश्य बतावें।'

देवताओं के इस प्रकार प्रार्थना करने पर दयामयी दुर्गा देवी ने कहा–'देवगण! सुनो– यह रहस्य अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ है। मेरे बत्तीस नामों की माला सब प्रकार की आपत्ति का विनाश करने वाली है। तीनों लोकों में इसके समान दूसरी कोई स्तुति नहीं है। यह रहस्यरूप है। इसे बतलाती हूँ, सुनो–

दुर्गा दुर्गार्तिशमनी दुर्गापद्विनिवारिणी।
दुर्गमच्छेदिनी दुर्गसाधिनी दुर्गनाशिनी॥
दुर्गतोद्धारिणी दुर्गनिहन्त्री दुर्गमापहा।
दुर्गमज्ञानदा दुर्गदैत्यलोकदवानला॥
दुर्गमा दुर्गमालोका दुर्गमात्मस्वरूपिणी।
दुर्गमार्गप्रदा दुर्गमविद्या दुर्गमाश्रिता॥
दुर्गमज्ञानसंस्थाना दुर्गमध्यानभासिनी।
दुर्गमोहा दुर्गमगा दुर्गमार्थस्वरूपिणी॥
दुर्गमासुरसंहन्त्री दुर्गमायुधधारिणी।
दुर्गमाङ्गी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्गमेश्वरी॥
दुर्गभीमा दुर्गभामा दुर्गभा दुर्गदारिणी।
नामावलिमिमां यस्तु दुर्गाया मम मानवः॥
पठेत् सर्वभयान्मुक्तो भविष्यति न संशयः॥

1 दुर्गा, 2 दुर्गार्तिशमनी, 3 दुर्गापद्विनिवारिणी, 4 दुर्गमच्छेदिनी, 5 दुर्गसाधिनी, 6 दुर्गनाशिनी, 7 दुर्गतोद्धारिणी, 8 दुर्गनिहन्त्री, 9 दुर्गमापहा, 10

।। श्री ।।

।। देवीखड्गमालास्तोत्ररत्नम् ।।

ओं त्रिपुरसुंदर्यै नमः
ओं हृदयदेव्यै नमः
ओं शिरोदेव्यै नमः
ओं शिखादेव्यै नमः
ओं कवचदेव्यै नमः
ओं नेत्रदेव्यै नमः
ओं अस्त्रदेव्यै नमः
ओं कामेश्वर्यै नमः
ओं भगमालिन्यै नमः
ओं नित्यकिलन्त्रये नमः 10
ओं भेरूण्डायै नमः
ओं वह्निवासिन्यै नमः
ओं महावज्रेश्वर्यै नमः
ओं शिवदूत्यै नमः
ओं त्वरितायै नमः
ओं कुलसुंदर्यै नमः
ओं नित्यायै नमः
ओं नीलपताकायै नमः
ओं विजायायै नमः

ओं सर्वमंगळायै नमः 20
ओं ज्वालामालिन्यै नमः
ओं चित्रायै नमः
ओं महानित्यायै नमः
ओं परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः
ओं मित्रेशमय्यै नमः
ओं षष्ठीशमय्यै नमः
ओं उड्डीशमय्यै नमः
ओं चर्यानाथमय्यै नमः
ओं लोपामुद्रामय्यै नमः
ओं अगस्त्यमय्यै नमः 30
ओं कालतापनमय्यै नमः
ओं धर्माचार्यमय्यै नमः
ओं मुक्तकेश्वरमय्यै नमः
ओं दीपकलानाथमय्यै नमः
ओं विष्णुदेवमय्यै नमः
ओं प्रभाकरदेवमय्यै नमः
ओं तेजोदेवमय्यै नमः
ओं मनोजदेवमय्यै नमः

ओं कल्याणदेवमय्यै नमः
ओं वासुदेवमय्यै नमः 40
ओं रत्नदेवमय्यै नमः
ओं श्रीरामानंदमय्यै नमः
ओं अणिमासिद्धये नमः
ओं लघिमासिद्धये नमः
ओं गरिमासिद्धये नमः
ओं महिमासिद्धये नमः
ओं ईशित्वसिद्धये नमः
ओं वशित्वसिद्धये नमः
ओं प्राक्राम्यसिद्धये नमः
ओं भुक्तिसिद्धये नमः 50
ओं इच्छासिद्धये नमः
ओं प्रप्तिसिद्धये नमः
ओं सर्वकामसिद्धये नमः
ओं ब्राह्मये नमः
ओं माहेश्वर्यै नमः
ओं कौमार्यै नमः
ओं वैष्णव्यै नमः
ओं बाराह्यै नमः
ओं माहेंद्रये नमः
ओं चामुंडायै नमः 60

ओं महालक्ष्म्यै नमः
ओं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
ओं सर्वविद्राविण्यै नमः
ओं सर्वाकर्षिण्यै नमः
ओं सर्ववशंकर्यै नमः
ओं सर्वोन्मादिन्यै नमः
ओं सर्वमहांकुशायै नमः
ओं सर्वखेचर्यै नमः
ओं सर्वबीजायै नमः
ओं सर्वयोन्यै नमः 70
ओं सर्वत्रिखंडायै नमः
ओं त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिन्यै नमः
ओं प्रकटयोगिन्यै नमः
ओं कामाकर्षिण्यै नमः
ओं बुद्धयाकर्षिण्यै नमः
ओं अहंकाराकर्षिण्यै नमः
ओं शब्दाकर्षिण्यै नमः
ओं स्पर्शाकर्षिण्यै नमः
ओं रूपाकर्षिण्यै नमः
ओं रसाकर्षिण्यै नमः 80
ओं गंधाकर्षिण्यै नमः
ओं चिताकर्षिण्यै नमः

ओं धैर्याकर्षिण्यै नमः
ओं स्मृत्याकर्षिण्यै नमः
ओं नामाकर्षिण्यै नमः
ओं बीजाकर्षिण्यै नमः
ओं आत्माकर्षिण्यै नमः
ओं अमृताकर्षिण्यै नमः
ओं शरीराकर्षिण्यै नमः
ओं सर्वाशा परिपूरक चक्रस्वामिन्यै नमः 90
ओं गुप्तयोगिन्यै नमः
ओं अनंगकुसुमायै नमः
ओं अनंगमेखलायै नमः
ओं अनंगमदनायै नमः
ओं अनंगमदनातुरायै नमः
ओं अनंगरेखायै नमः
ओं अनंगवेगिन्यै नमः
ओं अनंगांकुशायै नमः
ओं अनंगमालिन्यै नमः 100
ओं सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिन्यै नमः
ओं गुप्ततरयोगिन्यै नमः
ओं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
ओं सर्वविद्राविण्यै नमः
ओं सर्वाकर्षिण्यै नमः

ओं सर्वाह्लादिन्यै नमः
ओं सर्वसम्मोहिन्यै नमः
ओं सर्वस्तंभिन्यै नमः
ओं सर्वजृंभिण्यै नमः
ओं सर्ववशंकर्यै नमः
ओं सर्वरंजन्यै नमः 110
ओं सर्वोन्मादिन्यै नमः
ओं सर्वार्थसाधिकायै नमः
ओं सर्वसंपत्तिपूरण्यै नमः
ओं सर्वमंत्रमय्यै नमः
ओं सर्वद्वंद्वक्षयंकर्यै नमः
ओं सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिन्यै नमः
ओं संप्रदाययोगिन्यै नमः
सर्वसिद्धिप्रदायै नमः
ओं सर्वप्रियंकर्यै नमः 120
ओं सर्वमंगलकारिण्यै नमः
ओं सर्वकामप्रदायै नमः
ओं सर्वदुःखविमोचन्यै नमः
ओं सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः
ओं सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः
ओं सर्वांगसुंदर्यै नमः
ओं सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः

ओं सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिन्यै नमः
ओं कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नमः
ओं सर्वज्ञायै नमः 130
ओं सर्वशक्तयै नमः
ओं सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः
ओं सर्वज्ञानमय्यै नमः
ओं सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः
ओं सर्वाधारस्वरूपायै नमः
ओं सर्वपापहरायै नमः
ओं सर्वानंदमय्यै नमः
ओं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः
ओं सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः
ओं सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिन्यै नमः 140
ओं निगर्भयोगिन्यै नमः
ओं वशिन्यै नमः
ओं कामेश्वर्यै नमः
ओं मोदिन्यै नमः
ओं विमलायै नमः
ओं अरूणायै नमः
ओं जयिन्यै नमः
ओं सर्वेश्वर्यै नमः

ओं कौळिन्यै नमः
ओं सर्वरोगहरचक्रस्वामिन्यै नमः 150
ओं रहस्ययोगिन्यै नमः
ओं वाणिन्यै नमः
ओं चापिन्यै नमः
ओं पाशिन्यै नमः
ओं अंकुशिन्यै नमः
ओं महाकामश्वर्यै नमः
ओं महावज्रेश्वर्यै नमः
ओं महाभगमालिन्यै नमः
ओं सर्वसिद्धिप्रदचक्रस्वामिन्यै नमः
ओं अतिरहस्ययोगिन्यै नमः 160
श्री श्रीमहाभट्टारिकायै नमः
ओं सर्वानंदमयचक्रस्वामिन्यै नमः
ओं परापररहस्ययोगिन्यै नमः
ओं त्रिपुरायै नमः
ओं त्रिपुरेश्यै नमः
ओं त्रिपुरसुंदर्यै नमः
ओं त्रिपुरवासिन्यै नमः
ओं त्रिपुराश्रितायै नमः
ओं त्रिपुरमालिन्यै नमः

ओं त्रिपुरासिद्धये नमः
ओं त्रिपुरांबायै नमः 170
ओं महात्रिपुरसुंदर्यै नमः
ओं महामहेश्वर्यै नमः
ओं महामहाराज्ञयै नमः
ओं महामहाशक्तयै नमः
ओं महामहागुप्तायै नमः
ओं महामहानंदायै नमः
ओं महामहास्कंधायै नमः 180
ओं महामहाशयायै नमः
ओं महामहा श्री चक्रनगर साम्राज्ञयै नमः
ओं नमस्ते नमस्ते नमस्ते नमः

देवीखड्गमालानामावलिः ।।समाप्त ।।

शान्ति मंत्राः

ऊँ स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां, न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः गो
ब्रह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ता सुखिनो भवन्तु।।

काले वषतु पर्जन्यः पृथिवी सस्य शालिनी
देशोऽयं क्षोभरहितः ब्राह्मणाः सन्तु निर्भया।।

ऊँ सर्वेषां स्वस्ति भवतु, सर्वेषां शान्तिर्भवतु
सर्वेषां पूर्णं भवतु सर्वेषां मंगलं भवतु
ऊँ सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः
सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चित्‌दुःखभाग्भवेत्।।

ऊँ असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय
मृत्योर्मा अमृतंगमय

ऊँ पूर्णमदः पूर्णविदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्यपूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

1) **सामूहिक कल्याण के लिये**
देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेषदेवगणशक्तिससमूहमूर्त्या।
तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
भक्त्यां नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः।।

2) **विश्व के अशुभ तथा भय का विनाश करने के लिये**
यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो
ब्रह्मा हरश्चान हि वक्तुमलं बलं च।
सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
नाशाय चाशुभभयस्य मति करोतु।।

(14) सुलक्षणा पत्नी की प्राप्ति के लिये
पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्भवाम्।।

(15) बाधा—शन्ति के लिये
सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरिविनाशनम्।।

(16) सर्वविध अभ्युदय के लिये
ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः।
धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना।।

(17) दारिद्र्यदुः खादिनाश के लिये
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता।।

(18) रक्षा पाने के लिये
शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च।।

(19) समस्त विद्याओं की और समस्त स्त्रियों में मातृभाव की प्राप्ति के लिये
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः
स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत्
का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः।।

(20) सब प्रकार के कल्याण के लिये
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

(21) शक्ति–प्राप्ति के लिये
सृष्टिस्थितिविनाशानां शक्तिभूते सनातनि।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।

(22) प्रसन्नता की प्राप्ति के लिये
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि।
त्रैलोक्यवासिनामीड्ये लोकानां वरदा भव।।

(23) विविध उपद्रवों से बचने के लिये
रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा
यत्रारयो दस्युबलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्।।

(24) बाधामुक्त होकर धन–पुत्रादिकी प्राप्ति के लिये
सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः।
मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।

(25) मुक्ति–मुक्ति की प्राप्ति के लिये
विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम्।

रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

(26) पापनाश तथा भक्ति की प्राप्ति के लिये
नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि।।

(27) स्वर्ग और मोक्ष की प्राप्ति के लिये
सर्वभूता यदा देवि स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः।।

(28) स्वर्ग और मुक्ति के लिये
सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

(29) मोक्ष की प्राप्ति के लिये
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या
विश्वस्य बीजं परमासि माया।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्
त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः।।

(30) स्वर्ग में सिद्धि—असिद्धि जानने के लिये
दुर्गे देवि नमस्तुभ्यं सर्वकामार्थसाधिके।
मम सिद्धिमसिद्धिं वा स्वर्ग सर्वं प्रदर्शय।।

(31) शनि देव मंत्र
ऊँ हीं श्री शनिश्चरायै नमः

Printed at : Chaar Dishayen Printers, Cell : 9810297155